ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

एवं

भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक : 07-09 अप्रैल, 2016

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

संगोष्ठी

कार्यक्रम विवरण	कार्यक्रम का स्वरूप	कार्यक्रम स्थल	अवधि	आयोजक
हिंदी में भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन की चुनौतियाँ	राष्ट्रीय संगोष्ठी	वर्धा, महाराष्ट्र	07-09 अप्रैल, 2016	हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

'हिंदी में भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन की चुनौतियाँ' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी (07-09 अप्रैल, 2016)

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र तथा भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र के द्वारा हुआ। केंद्र के तत्कालीन संयुक्त निदेशक, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने संगोष्ठी की उपयोगिता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। भाषा विज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के अध्यक्ष, डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय ने कार्यक्रम की भूमिका एवं कार्य योजना प्रस्तुत किया। प्रो. वशिनी शर्मा ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में चुनौतियों का सामना करते हुए उनसे निपटने की आवश्यकता बताई। प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा कि हमें 'व्याकरण जाँचक बनाने से पहले 'नियमों' को परिभाषित करना चाहिए जिससे हम योजनाबद्ध ढंग से आगे बढ़ सकें। इस हेतु उन्होंने महत्वपूर्ण एम.ओ.यू. करने की आवश्यकता बताई। अध्यक्षीय उद्बोधन में मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने बताया कि वर्तमान तकनीकी प्रणाली के द्वारा हमारे चिंतन और लेखन पद्धति में व्यापक परिवर्तन हुआ है। तकनीक के बिना जीवनचर्या लगभग न के बराबर होती जा रही है। आगत अतिथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन प्रो.हनुमान प्रसाद शुक्ल ने किया। सत्र का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. धनजी प्रसाद ने किया।

संगोष्ठी में डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल ने बैंकिंग और अनुवाद के क्षेत्र में तकनीक की आवश्यकता और उपयोगिता को स्पष्ट किया। डॉ. रणजीत भारती ने विभिन्न भाषाओं में तकनीक की सहायता से डाटा प्राप्त करने के उपाय बताए। प्रो. ठाकुर दास ने कहा कि हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है अत: हमें मशीनी अनुवाद में आ रही त्रुटियों को वाक्य के संरचनात्मक स्तर पर सुधारकर दूर करना चाहिए। प्रो. वशिनी शर्मा ने कहा कि वर्तमान तकनीक आधारित विश्व हिंदी को न सिर्फ सुन रहा है बल्कि प्रयोग भी कर रहा है। पर्यटन, संस्कृति एवं सामाजिक पोर्टलों पर भी हिंदी का इस्तेमाल बड़ी तेजी से किया जा रहा है। डॉ. धनजी प्रसाद ने 'आचार्य' नाम का हिंदी व्याकरण जाँचक प्रस्तुत किया। डॉ. राजनारायण अवस्थी ने अनुवाद को सिर्फ भाषा के अर्थ का स्थानांतरण न मानते हुए संस्कृति और शब्द संवेदना को भी ध्यान में रखकर अनुवाद किये जाने को अनिवार्य बताया। डॉ. शैलेन्द्र कुमार ने अनुवाद के क्षेत्र में चल रही नई-नई पद्धतियों के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने भाषा प्रौद्योगिकी के महत्व, मशीनी अनुवाद की आवश्यकता व उपयोगिता एवं यूनिकोड की कमियों तथा उसे ठीक किये जाने हेतु उपायों पर चर्चा की। प्रो. उमा शंकर उपाध्याय ने हिंदी के संदर्भ में भाषा विज्ञान के विविध पक्षों तथा भाषा प्रौद्योगिकी के संवर्धन तथा उसकी चुनौतियों का उल्लेख किया। संगोष्ठी में 17 बाह्य विशेषज्ञों सहित 77 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

ज्ञान शांति मैत्री